ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 11 | JULY - 2019

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर

प्रा. विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण
हिंदी विभाग प्रमुख, तुलजाभवानी महाविद्यालय,
तुलजापुर.

प्रास्ताविक

भाषा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है मनुष्य अपने व्यवहारों की आपूर्ति करने हेतु भाषा का सुचारु प्रयोग करता है भाषा के इतिहास में यह देखा गया है कि जब पहले मनुष्य के पास उसकी अपनी भाषा नहीं थी तब भी वह किसी ने किसी प्रकार से भाषा का प्रयोग कर अपने उद्देश्य की आपूर्ति कर रहा था। आदिकाल में मनुष्य ध्वनियों के माध्यम से अलग-अलग तरह के संकेत अन्य मनुष्य को देता था हम यह कह सकते हैं कि भाषा ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करती है। क्योंकि इस धरातल पर एकमात्र प्राणी मनुष्य ऐसा है कि उसके पास ध्वनि शक्ति के माध्यम से निर्माण हुई एक भाषा है जिसके माध्यम से वह अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। धोनी ही भाषा की मूल इकाई मानी गई है इस बात को हम भूल नहीं सकते। यह बात सच है कि अन्य प्राणियों की भी अपने आप में भाषाएं होती है किंतु अन्य प्राणियों के पास शब्द शक्ति का अभाव है और इसीलिए मनुष्य भाषा के माध्यम से एक दूसरे के साथ संवाद साथ सकता है आधुनिक युग में बहुत बड़े पैमाने पर भाषा मनुष्य के लिए रोजगार की उपलब्धि कर सकती है।

हिंदी भाषा और जनसंपर्क

भारत की एकमात्र भाषा हिंदी ऐसे है कि इस भाषा को भारत की लगभग सभी लोग समझ सकते हैं बोल सकते हैं और लिख भी सकते हैं। हमारे भारत देश में बहुत बड़े पैमाने पर भले ही भाषा को लेकर विवाद है किंतु हमें इस बात का एहसास होना जरूरी है कि भारत देश को हिंदी भाषा के अलावा कोई दूसरा विकल्प हमारे सामने उपलब्ध नहीं है हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसे हिंदी भाषा के कारण देश की आजादी को हम प्राप्त कर सके हैं। हमारे स्वतंत्रता सेनानी जैसे की भगत सिंह महात्मा गांधी नेताजी सुभाष चंद्र बोस डॉ बाबासाहेब अंबेडकर इन सभी लोगों ने अपने कार्यकाल में हिंदी भाषा के माध्यम से ही देश की जनता को जागृत करने का काम किया है। और यह काम इसलिए प्रभावी तरीके से हो पाया है कि लोग इस भाषा को पूर्ण रूप से समझ सकते हैं तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा यह घोषणा जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने की थी तब सारे देश ने इस भाषा को समझा और हमारे देश के नौजवानों में यह संदेश पहुंचा कि देश को नौजवानों की आवश्यकता है। बिल्कुल

इसी तरह से गांधी जी ने भी हिंदी भाषा को अपना कर देश के अंतर्गत लोगों को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया है अत हम यह कह सकते हैं कि भारत देश में जनसंपर्क की सबसे बड़ी भाषा हिंदी ही है।

हिंदी भाषा की व्यावसायिकता

दरअसल यह बात बिल्कुल साफ है कि किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति अगर सफल बना चाहे तो उसके पास विशिष्ट प्रकार का भाषा ही कौशल होना आवश्यक है अगर व्यक्ति के पास भाषा का कौशल नहीं है तो वह अपने आप को प्रभावित तरीके से समाज के सामने अभिव्यक्त नहीं कर सकता अगर व्यक्ति का प्रभाव समाज के ऊपर नहीं होता है तो वह अपने व्यवहारों में असफल हो जाता है। सहज तरीके से हमें इस बात को स्वीकृत करना चाहिए कि सबसे बड़ी आबादी जो हिंदी भाषा को जानती है समझती है और बोलती है इस विशेषता को जानती हुए अगर व्यक्ति इस भाषा की व्यवसायिकता को अपनाता है तो निश्चित रूप से अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार वह व्यक्ति अपने व्यावसायिक गुना को प्राप्त कर सकता है उच्च कोटि की व्यवसायिकता एवं दक्षता भाषा क्षेत्र में निहित जरूरी है इस मामले में भाषा का उच्च प्रशिक्षण प्राप्त करना बहुत ही आवश्यक माना गया है। १ " यही कारण है कि कुछ अनुभवी और प्रशिक्षित लोग इस क्षेत्र में सफल हो जाते हैं जबकि दर्जनों प्रशिक्षित लोग और व्यावसायिक दृष्टि से कुशल लोग सफल हो जाते हैं जो कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते वे या तो साधनों को खोजते हैं अथवा काम वेतनमान को दोषी मानते हैं।'

रोजगार के क्षेत्र में परिनिष्ठित भाषा का महत्व

यह बात सच है कि भारत देश को हिंदी भाषा ने सभ्यता संस्कृति परंपरा परिनिष्ठित की है एक समय ऐसा था की इसी भाषा के कारण भारत देश सभ्यता की ओर बढ़ा। किंतु एक प्रक्रिया के बाद एक समय के बाद आधुनिक और वैज्ञानिक युग में जब हम आगे बढ़ते हैं तब हमें अपनी भाषा की परिधि को भी बढ़ाना जरूरी है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में हमें भाषा के रोजगार पर पहलुओं को देखना भी आवश्यक होगा आजकल भाषा क्षेत्र में भाषा के शुद्धता को लेकर बड़ा महत्व भाषा को प्राप्त हुआ है और इसीलिए हमें हिंदी भाषा के परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग रोजगार के क्षेत्र में करना आवश्यक है पर निश्चित भाषा को स्टैंडर्ड भाषा भी कहा गया है जब बोली को व्याकरण के नियमों में आबद्ध किया जाता है तो वह भाषा एक आदर्श भाषा बन जाती है जिसका प्रयोग प्रशासनिक कार्यों में साहित्यिक रचनाओं में शिक्षा के कार्य में किया जाता है हिंदी अंग्रेजी ऋषि और मराठी भारत में इत्यादि पर निश्चित भाषाएं हैं पर निश्चित भाषा का महत्व इसलिए भी माना गया है कि यह बहुत सारे आबादी को प्रभावित करती है जब हम किसी टीवी चैनल पर हिंदी भाषा के माध्यम से खबरें देखते हैं तथा हिंदी भाषा का कोई सिनेमा देखते हैं तो यह बात साबित हो जाती है कि हमें भाषा का परिनिष्ठित रूप रोजगार की प्राप्ति करने के लिए कितना आवश्यक है।

रोजगार के क्षेत्र में पारिभाषिक शब्दावली का महत्व

पारिभाषिक शब्द का सीधा तात्पर्य यह होता है कि पारिभाषिक शब्द अर्थात जो ऐसे शब्द होते हैं जो किसी विशिष्ट क्षेत्र के साथ संबंध होते हैं कार्यालय न्यायालय सूचना प्रौद्योगिकी विज्ञान जैसे इन शब्दावलियों का प्रयोग होता है। कार्यालय इन कामकाज में लिए पारिभाषिक शब्दावली की बड़ी महत्व होती है भारत जैसे विशाल भूपेश में विभिन्न भाषाएं बोली जाती है। भारतेंदु की उक्ति " चार कोस पर बदले पानी आठ कोस पर बानी' बिल्कुल सार्थक दिखाई देती है हर एक भाषा में कई सारी बोलियां होती है एक ही भाषा की बालियां का रूप गठन और संरचना में काफी अंतर दिखाई देता है इसलिए भारत जैसे

बहुभाषिक देश में पारिभाषिक शब्दावली का महत्व महसूस होता है। रजब हम अपना कार्य करने हेतु किसी सरकारी कार्यालय में किसी अखबार में पत्रकार के रूप में किसी टीवी चैनल पर एंकर के रूप में, कहीं बाजार में कहीं रेडियो स्टेशन पर, किसी रेलवे स्टेशन पर कार्यरत होते हैं तब हमें विशिष्ट प्रकार की भाषा का प्रयोग करना जरूरी होता है और समय में हमारे पास पुख्ता शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक होता है और यही पुख्ता शब्द अर्थात पारिभाषिक शब्द होते हैं।'

अनुवाद के माध्यम से रोजगार की उपलब्धि

वैश्विकता के इस प्रक्रिया में हम केवल भाषा ज्ञान होने के कारण पीछे रह सकते हैं इसलिए जरूरी यह है कि हमारे पास कम से कम तीन भाषाओं का ज्ञान होना जरूरी है पहले हमारी मातृभाषा दूसरी हमारे देश की भाषा और तीसरी अंग्रेजी भाषा। अब इन तीन भाषाओं के माध्यम से हम अपने जीवन में बड़े पैमाने पर रोजगार की उपलब्धि कर सकते हैं। जैसे कि आज की माहौल में हम देख रहे हैं कि भारत के दक्षिण में भले ही हिंदी भाषा का विरोध होता रहा हो लेकिन जब हम अपने आप को वैश्विक जगत का नागरिक बनना चाहते हैं तो हमें अपनी प्रादेशिक बाद से ऊपर उठाना उतना ही जरूरी है हम अपनी ही प्रादेशिक भाषा को जकड़ कर नहीं रख सकते हमें इस चीज से दूसरी और जाना होगा तेलुगू कन्नड़ गुजराती राजस्थानी इन सभी भाषाओं में जितने भी सिनेमा साहित्य नाटक आदि निर्माण होने जा रहे हैं अगर वह हम अपने प्रदेश के बाहर लेकर केआना चाहते हैं तो इसके लिए अनुवाद के बगैर हमारे सामने कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इतना ही नहीं दक्षिण में तमिल भाषा के माध्यम से जितने भी सिनेमा बन रहे हैं उनकी कमाई केवल हिंदी भाषा के माध्यम से ही हद से ज्यादा हो रही है, हमे इस बात को नहीं भूलना चाहिए अगर आपको हिंदी भाषा के साथ नफरत है तो आप हिंदी में अनुवाद नहीं कर सकते केवल अपने स्वार्थ के लिये हिंदी भाषा का प्रयोग करे और अपना स्वार्थ पूर्ण होने के बाद हिंदी भाषा को छोड दे यह बात सही नही लगती झसलिये भारतीय भाषा मे जितना भी साहित्य निर्माण होणे जा रहा है वह सारा कसारा साहित्य हिंदी भाषा में अनुवादित होना जरूरी है, तरी हम वैश्विक जगत के नागरिक बन सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व सूचना प्रौद्योगिकी

मनुष्य ने प्रकृति में व्याप्त विद्युत शक्ति को जिस दिन प्राप्त किया या यह कहे की उसके चमत्कारी रहस्य को समझा उसने मानव सभ्यता के स्वरूप को बदलने की कोशिश की इसी का परिणाम "३इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का नाम सुनते ही हमारे मन में रेडियो टीवी केवल कंप्यूटर इंटरनेट आदि का चित्र उभर के सामने आता है यह सभी माध्यम बिजली के उपयोग पर आधारित होते हैं इसलिए इन्हें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहा जाता है 'आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अपनी व्यापकता को बनाए हुए हैं क्योंकि इसके प्रचलन में एक और दृश्य श्रव्य माध्यम दोनों के पहले मिलते हैं वहीं दूसरी इलेक्ट्रॉनिक युक्तियां का वैज्ञानिक एवं तकनीकी पक्ष कई कार्यों को संपादित करता है। जैसे आज हम यह कह सकते हैं कि देश के नौजवानों को विज्ञान की युग में पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत ही प्रभावित तरीके से काम करने का अवसर प्राप्त हो सकता है क्योंकि पत्रकारिता को हम किसी सीमित क्षेत्र में बंद नहीं सकते हैं इसमें मानव जीवन के साथ संबंधित संपूर्ण घटनाएं और स्थितियों का लेखा-जोखा होता है बशर्ते हमारे पास हमारे हिंदी भाषा का ज्ञान सटीक होना जरूरी है।

हिंदी भाषा और विज्ञापन का क्षेत्र

यह विज्ञापन एक सतरंगी दुनिया का खेल है किसी भी वस्तु सेवा या विचार को आगे बढ़ाने के लिए विज्ञापन को सहारा बनाया जाता है और आज का युग भी विज्ञापन का ही युग है। दरअसल हमारे भारत देश में पढ़े-लिखे नौजवान महाविद्यालय से शिक्षा दीक्षा हासिल कर महाविद्यालय के बाहर तो निकलते हैं किंतु वे सभी बेरोजगार बनकर इधर-उधर घूमने लगते हैं उन्हें समझ में नहीं आता की उनका पैसा उनके ही हाथ में है लेकिन उन्हें दिशा देने वाला कोई नहीं है। विज्ञापन एक ऐसा ही क्षेत्र है जो हिंदी भाषा के माध्यम से भारत के नौजवानों को आसानी से रोजगार उपलब्ध करा करके दे सकता है व्यापारिक विकास तथा प्रचार प्रसार करने के लिए विज्ञापन बेहद जरूरी है विज्ञापन को यदि हम विभाजित कर दें तो यह दो ब्दों से बना है वि और ज्ञापन। ज्ञापन का तात्पर्य है जानकारी देना और वी का उपसर्ग के रुप में प्रयुक्त होता है। विज्ञापन सच्चाई में जनमत को अपने पक्ष में करने का सशक्त माध्यम कहा गया है इस माध्यम के जरिए हम अपने उत्पादन की बात लोगों के सामने प्रभावी तरीके से रख सकते हैं और हमारे रोजगार में उपलब्धि को पैसों को बढ़ावा दे सकते हैं।

हिंदी मीडिया की आज की आवश्यकता

हां यह बात सच है कि आम जनमानस में आज कोई भी मीडिया क्यों ना हो बहुत हद तक बदनाम है और यह सहज भी है किंतु सोचने वाली बात यह है कि इतनी अच्छी हिंदी होने के बावजूद मीडिया बदनाम क्यों है इसका कारण यह है कि इस मीडिया के अंतर्गत काम करने वाले लोग जनमानस को उसे तरह से प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं जैसे की करना जरूरी है आज मीडिया को सबसे अधिक जरूरत भाषा की जानकारी की है अच्छे संपादक अनुवादक संवाददाता निवेदक प्रूफ़्रीडर डॉक्यूमेंट्री लेखक पटकथा लेखक संवाद लेखन गीत लेखक और कॉमेंटेटर अब इतने सारे अवसर हमारे पास है लेकिन लो ग यहां जाने से कतराते हैं क्योंकि इनके पास संबंधित विषय का ज्ञान नहीं है। अच्छा यही होगा कि हम खुद को रोशनी की जगह हिंदी भाषा का यह उचित प्रशिक्षण लेकर क्यों ना मीडिया की तरफ जाए यह बात तो बिल्कुल साफ है कि उचित भाषा का ज्ञान वाले लोगों की इस क्षेत्र को बेहद आवश्यकता है। कहना जरूरी नहीं कि अब मीडिया के लिए उपयुक्त हिंदी अर्थात प्रयोजन पर हिंदी के गंभीर अध्ययन की आवश्यकता है व्यक्ति समाज और देश के विकास के लिए अब हिंदी के इस प्रयोजनीय पक्ष को हमें अपनाना होगा। अब वह जमाना बीत गया कि हम विज्ञापन की प्रयोजनमूलक हिंदी की व्याकरण की परिभाषाएं बच्चों को समझाएं यह बात निश्चित है कि एक विशिष्ट अवस्था में बच्चों का इस ज्ञान से परिचय होना आवश्यक है किंतु उम्र का एक पड़ाव ऐसा भी आता है कि आपको अपने आप को दूसरों के सामने साबित करना होता है और ऐसे समय में आपके पास वक्त रहते हैं भाषा का ऐसा ज्ञान होना चाहिए |